VOL- VIII ISSUE- V MAY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

बंजारा लोक-साहित्य एवं संस्कृति

सुरेश राठोड़, शोधार्थी,
इफ्लू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
ईमेल- sureshsjr91@gmail.com

लोक सहित्य समाज का अभिन्न अंग है। समाज में लोक साहित्य का महत्त्व असाधारण है। लोक साहित्य की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। प्रारंभिक अवस्था में लोक साहित्य मौखिक रूप तक ही सीमित था लेकिन प्रकारांतर से यह लिखा जाने लगा। इतिहास की अनुपलब्धता के बारे में डॉ.मोतीराज राठोड़ लिखते हैं कि- "इस जाति का इतिहास आज लिखित रूप में उपलब्द नहीं है, पर भारतीय इतिहासकारों ने तथा ब्रिटिश शासकों ने इसका उल्लेख व्यापर के लिए भटकने वाली जनजाति के रूप में किया है |"[1]

सदियों पहले शुरू लोक साहित्य की यह परंपरा आज इक्कीसवीं सदी में भी निरंतर रूप से जारी है। हर समाज का अपना एक विशिष्ट लोक साहित्य रहा है। उसमें बंजारा समाज का लोक साहित्य भी महत्त्वपूर्ण है। इस लोक साहित्य में समाज का समग्र परिदृश्य अभिव्यक्त होता है। अपने जीवन में आने वाली सुख-दु:ख हर्षोल्लास एवं भावनाएँ आदि को इस लोक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। लोक साहित्य में चेतना भी समाहित होती है। उसमें जीवन जीने का संदेश, नैतिकता के महत्व के साथ-साथ सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना भी समाहित है। बंजारा समुदाय लोक साहित्य प्राचीन एवं समृध्द है। बंजारा जाति अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण समग्र विश्व में प्रसिध्द है। बंजारा जाति का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली माना जाता है। प्रो. श्यामराव राठोड़ अपने आलेख में लिकते है कि- "बंजारा समाज की इतिहास में उपस्थिति की पड़ताल हम बंजारा समाज के वास्तविक क्रियाकलापों से कर सकते हैं| इस क्रम में राजस्थानी लोक-गीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका है| कुछ विद्वानों ने बंजारा समाज को सिंधुघाटी सभ्यता का मूलनिवासी बताया है|"[2]

बंजारों का मुख्य व्यवसाय व्यापार रहा है। ये लोग व्यापार के सिलसिले में पुरे भारत में भ्रमण करते थे। संपूर्ण भारत में फैला हुआ बंजारा समाज भारतीय जन जातियों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अपनी बोली, वेश-भूषा लोकगीत, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोक-नृत्य, इनके त्यौहार रीतिरिवाज, पर्व, आचार-विचार, और व्यवस्था और लदेणी के कारण और अपनी संस्कृति के कारण बंजारा समाज ने अपनी एक अलग पहचान बनायी। जिस कारण आज समाज के लोग इनकी वेश-भूषा, संस्कृति आदि को जानते हैं। बंजारा समाज स्थानीय समाज से दूर अपना तांडा (गाँव) बनाकर रहता है। वहाँ पर उनके लिए और उनके पशुओं के लिए सारी सुविधाएँ होती थी। बंजारा समाज में लोकगीतों का प्रमुख स्थान है, यह लोकगीत उनके हर्षोल्लास के प्रतीक माने जाते हैं। इस समाज में कोई भी मांगलिक कार्य हो, वह कार्य लोक गीतों से शुरू होता है। विविध संस्कारों के

विविध लोकगीत हैं- जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार के गीतों की रीति भी अलग-अलग होती हैं और मृत्यु संस्कारों में आज भी 'ढ़ावलो' गाया जाता है। त्यौहारों के गीत भी अलग-अलग होते हैं। श्रम करते समय श्रम गीत गाने की परंपरा भी बंजारा समाज में हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक जाति, धर्म, संप्रदाय के लोग निवास करते हैं। उनकी भाषा एवं बोलियाँ भी भिन्न-भिन्न होती है इसके साथ-साथ खान-पान, वेशभूषा, संस्कृति भी पृथक है। यहाँ अनेक जातियाँ एवं जनजातियाँ निवासरत हैं। इनमे बंजारा एक महत्वपूर्ण जनजाति एवं समाज है। बंजारा मानवों का ऐसा समुदाय है, एक ही स्थान पर बसकर जीवन यापन करने की बजाय एक स्थान से दूसरे स्थान पर निरंतर भ्रमणशील रहता है। वह जंगलों, पहाड़ों, मैदानी पठारों तथा प्राकृतिक झंझावातों एवं संघर्षों के बीच निवास करता है।

"सिंधू नंदीरे पाळेम।
सात सिन्दुरे राळेम।
आर्य दामडीया दामड लगा गोरे।
मारो सेना नायक।"[3]

बंजारा समाज का इतिहास सदियों पुराना है। बंजारा समाज की संख्या महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में सर्वाधिक है। संपूर्ण भारत में बंजारा समाज की कई उपजातियां है, जिनमें राजस्थान में बामणिया, लाबानी, मारू, भाट और गवारियाँ उपजाति है। जनसंख्या के लिहाज से 'बामणिया' बंजारा समुदाय सबसे बड़ा माना गया है। बंजारा समुदाय हमेशा उत्पीड़न का शिकार होता रहा है चाहे सामंतशाही व्यवस्था से या अंग्रेजों से या फिर आजादी के बाद सरकारी नीति से।

बंजारा समाज भारतीय आदिम जीवन का एक स्वतंत्र समाज है। इस समाज की अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान, संस्कृति, आचार-विचार की स्वतंत्र परंपरा होती है। बंजारों का इतिहास देखा जाए तो यह कौम निडर, निर्भीक, साहसिक, लड़ाकू और जुझारू रही है। इस समुदाय ने खुद को अन्य समुदाय से अलग रखा है। बंजारों की खासियत यह होती है कि ये किसी स्थान की सीमा को स्वीकार नहीं करते। बेधड़क, बेहिचक ये बढ़ते जाते हैं। बंजारों ने व्यापार के जरिए देश को विभिन्न भागों से जोड़ा है।

भाषा :

बंजारा समाज की विशिष्ट-पूर्ण संस्कृति केवल भारत में ही नहीं बल्कि भारतीय उपखंड में भी देखने को मिलते हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में बंजारों को अलग-अलग नामों से जाना जाता है तथा पहचान है किंतु उनकी भाषा मात्र एक ही है। उनकी भाषा को 'गोरबोली' कहा जाता है। "भारत में लगभग 2.5 करोड़ से अधिक बंजारा लोग गोरबोली, बंजारा बोली गोरमाटी बोलते हैं|"[4] यह भाषा इसलिए यह अनोखी की भाषा है, जो भी बंजारा समाज पिरोए रखने का काम करते करते है| भाषा विद्वानों के अनुसार गोरबोली भाषा 'इंडो-आर्यन भाषा परिवार की मानी जाती है|

वेशभूषा :

आम तौर पर बंजारा पुरुष सिर पर पगड़ी बांधते हैं। कमीज या झब्बा पहनते हैं। धोती बांधते हैं। हाथ में नारमुखी कड़ा, कानों में मुरकिया व झेले पहनते हैं। अधिकतर ये हाथों में लाठी लिए रहते हैं। बंजारा समाज की महिलाएं बालों की फलियाँ गुँथकर उन्हें धागों में पिरोरकर चोटी से बांध देती है। महिलाएं गले में सुहाग का प्रतीक 'दोहड़ा' पहनती है। हाथों में चूड़ा, नाक में नथ, कान में चाँदी के ओगन्या, गले में खंगाला, पैरों में कड़ियाँ, लंगड़, अंगुलियों में बाजूबंद, डोडिया, हाथ-पान व अंगूठियाँ

पहनती है। कुछ ओढ़नी ओढ़ती है। बूढ़ी महिलाएँ कांचली पहनती है।

धर्म :

बंजारों का धर्म जादूगरी है और ये गुरु को मानते हैं। इनका पुरोहित 'भगत' कहलाता है। सभी बीमारियों का कारण इनमें भूत-प्रेत की बाधा, जादू-टोना आदि माना जाता है। छत्तीसगढ़ के बंजारे बंजारा देवी की पूजा करते हैं, जो इस जाति की मातृशक्ति की द्योतक हैं। सामान्यत: ये लोग हिन्दुओं के सभी देवताओं की आराधना करते हैं।

बंजारे कुछ खास चीजों के लिए बेहद प्रसिद्ध हैं, जैसे नृत्य, संगीत, रंगोली, कशीदाकारी, गोदना और चित्रकारी। बंजारा समाज पशुओं से बेहद लगाव रखते हैं। अधिकतर बंजारों के कारवां में बैल होते हैं जिनमें वो अस्थायी घर बनाकर रखते हैं। इसमें रोजाना इस्तेमाल की जाने वाले सामान वे रखते हैं। दिनभर चलना और सूर्यास्त पर कहीं डेरा डालकर वहीं ये खाना बनाते हैं।

लोकगीत और लोकनृत्य बंजारा के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। कई फिल्मों में बंजारों पर गाना फिल्माया जा चुका है। इनमें कई गीत तो सुपरहिट हुए हैं जो आज भी लोगों की जुबान पर रहते हैं। कई पुरानी फिल्में भी बंजारों की पृष्ठभूमि पर ही बनी है।

लेकिन आज के आधुनिक संदर्भ में देखा जाए तो बंजारा समाज की युवा पीढ़ी अधिक मात्रा में शिक्षा ग्रहण कर रही है। अंधविश्वास से धीरे-धीरे मुक्त हो रहे हैं। आजकल बंजारा लोग तांडा को छोड़कर शहरों में भी रहने लगे हैं और कहीं-कहीं पूरी तरह शहरों में बस चुके हैं ये सारे परिवर्तन उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव आने के कारण हो रहा है। काम-काज करने लगे हैं। इसीलिए आर्थिक स्थिति में भी बदलाव हो गया है।

बंजारा लोक साहित्य जन चेतना का साहित्य है। उसमें मनुष्य को जीवनपथ पर किस प्रकार मार्गदर्शन करना चाहिए आदि संदर्भों को दे रहा है। यह समग्र चेतनाओं से ओत-प्रोत है और वह मनुष्यता पर बल देता है। सभी मानवों को एक समानता की दृष्टि से देखता है। इसीलिए इसकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है। विशेषकर बंजारा लोक साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना महत्त्वपूर्ण है। आज के आधुनिक युग के संदर्भ में यह चेतनादायी लोक साहित्य पहले की अपेक्षा और अधिक प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है।

आधार-सूची

1. बळीराम हिरामण पाटील, बंजारा लोगों का इतिहास, (अनु.) के.जी. वणजारा, अनीता नायक, इन्द्रनील नाईक, नवदुर्गा प्रकाशन, गुजरात-2012
2. प्राचीन बनजारा समाज व्यवस्था, प्रा. मोतीराज राठोड़, बी. के. नाईक, ठाणे- 2013
3. बंजारा लोक साहित्य में समाज और संस्कृति, प्रा. मोतीराज राठोड़, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर-1988
4. बंजारा समाज, डॉ. श्रीराम शर्मा, दक्षिण प्रकाशन, हैदराबाद- 1983
5. बंजारा जाति समाज और संस्कृति, यशवंत जाधव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-1992
6. बंजारा समाज ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, डॉ. वी. रामकोटी पवार, जवाहर प्रकाशन, मथुरा-2012

---

[1] बंजारा संस्कृति- मोतीराज राठौड़, पृ.सं.-12

[2] बंजारा समाज : बोली-भाषा

[3] **बंजारा समाज** : लोकजीवन आणि लोकगीत, सुनील राठोड़, पृ. सं.-19

[4] भारत के विमुक्त एवं घुमंतू जन-समुदाय, सं. व्यंकट धारासुरे, पृ.सं. 173